

(230)

747

H

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

GOVERNMENT OF INDIA

NEW DELHI.

Call No. _____

Accession No. _____

GIPNLK—7/DAND—5-9-60—15,000

1166
10/21

201

← वन्देमातरम् →

सत्याग्राही

अर्थात्

राष्ट्रीयगान



शौर—समराङ्गणमें डटे रहो, भारत वासी मैं आसीह ।
आर्य्यवरणिमें धामर में, धवल स्वजाकतदाती ह ॥

लेखक
महाश्रीरामिह वर्मा
जिला - डम्नाच

प्रकाशक—
रामस्वरूप गुप्त
भक्तिक



सत्याग्रही भंडा

अर्थात्



राष्ट्रीयगान

न डरना चाहिये

काम करने का समय है काम करना चाहिये ।
 धर कदम आगेको फिर पीछे न हटना चाहिये ॥
 धर कदम पीछेको हटते वो है कायर बुजदिले ।
 वीर भारत वर्ष के हो शर्म खाना चाहिये ॥
 अब न तुमको भाइयो जेलों से डरना चाहिये ।
 जी जान से अब देश पर कुर्बान होना चाहिये ॥
 नौ जवानो जाग जायो नींद को अब त्याग दो ।
 प्राण देकर भी तुम्हे आजादी लाना चाहिये ॥

वो जमाना आ गया आजाद भारत होयगा ।
 देशके हित तुमकोभी कुछ कर दिखाना चाहिये ॥
 कह रहा मह वीर है सिद्धांत मेरा है यही ।
 जेल जाने के लिये तुमको न डरना चाहिये ॥

→ कवित्त ←

कड़ी पहनादो पैर बेडी में भरा दो,
 चाहेसूतीपे चढ़ादो लोहेचनेभी चबाऊंगा ।

बिच्छू विछादो बांध छांद के सुनादो फिर,
 आग भी लगा दो मुसकराते जल जाऊंगा ॥

गिरि से गिरा दो काले शर्प से डसा दो,
 चाहेखाल भी लिचादो उफ रज्ज न लाऊंगा ।

चर्पा प्रण ठानो सत्याग्रह समर बीच,
 ठाढ़े कट जाऊं पैर पीछे न हटाऊंगा ॥

॥ गजल ॥

पे नौकर साही छोड़ देतू, ये करना काम दलाली का ।
 निज भाइयों पर अपने ध्यारे क्यों करते काम दलाली का ॥
 हम लोग दुकान नशे पर जा, हर भाई को समझाते हैं ।
 पैरों पर पड़ लेटते जम, भाइयों का नशा छुड़ाते हैं ॥
 उनके ऊपर जा जाकर के, शान दिखाते पगड़ी लाली का ।
 पे नौकर साही छोड़ देतू, ये करना काम दलाली का ॥
 भारतमाता का पिया दूध, भारत के अन्न को खाते हो ।
 अन्त समय मरने पर भी, भाइयों के कंधे जाते हो ॥
 निज मुख पे तुम ख्याल करो, लग गई दाग क्या ह काली का ।
 पे नौकर साही छोड़ देतू, ये करना काम दलाली का ॥
 जनता को साथ लिबाकर तुम, गांजा और भांग दिलाते हो ।
 भाई पर अपने दिखा शान, क्या शर्म जरानहिं खाते हो ॥
 भाई मैं तेरा मरता हूँ, क्यों करो काम बदचाली का ।
 पे नौकर साही छोड़ देतू, अब करना काम दलाली का ॥

दादा तर्ज दिल्लीवाल ।

छोड़ो छोड़ो गुलामी देशवालो । इसमें इज्जत नहीं है देशवालो ॥
 ताज मिलता है गुलामी का इसे तुम छोड़ दो ।
 पैसा लेते हो हरामी का उसे भी छोड़ दो ॥
 अब तो खावो शरम तुम देश वालो ।
 छोड़ो छोड़ो गुलामी देश वालो ॥
 ये देश वालो सुनो हमको सताना छोड़ दो ।
 हम निहत्थों पर तो अब गोली चलाना छोड़ दो ॥
 क्या तुमको दया ना देश वालो ।
 छोड़ो छोड़ो गुलामी देश वालो ॥
 साथ जो परदेसियों का दे रहे हो छोड़ दो ।
 औ गरीबों से भी तुम रिश्वत का लेना छोड़ दो ॥
 न है इसमें भलाई देश वालो ।
 छोड़ो छोड़ो गुलामी देश वालो ॥
 कह रहा महावीर पेशा ये बुरा है छोड़ दो ।
 देश की सेवा करो दुश्मन से नाता तोड़ दो ॥
 घर में चर्खा चलाओ देश वालो ।
 छोड़ो छोड़ो गुलामी देश वालो ॥



● गजल कबाली ●

मेरे प्यारे हमें अब ले चलो तुम जेत लाने को ।

तड़कते मुदतों से हैं वहां कामज निछाने को ॥
पिन्हादो हथरुडो बेड़ो और जंतोर भी कस दो ।

फुलत मुंह भर खुता रखना सुदेयी गीत गाने को ॥
मेरे प्यारे हमें तुम ले चलो अब जेत लाने को ।

मूँज बटकर बता देंगे लुही चक्रो चलो लेंगे ॥
सरो तैमार वं हैं वहां कोल्ह घुपाने को ।

मेरे प्यारे हमें अब ले चलो तुम जेत लाने को ॥
फड़कते आज भारत में सबों के हांथ रह ते हैं ।

बगीचों और बंगलों में सदा गोली चलाने को ॥
मेरे प्यारे हमें अब लेवलो तुम जेत लाने को ।

नहीं भरता है जो अब साग पूड़ी या मिठाई से ॥
लजबता जो तुम्हारे अब भुने दाने चवाने को ।

सिया माफी मांगने वालों की नशीहत ।

माफी मत माँगो मेरे भाइयो, चाहे जान भले ही जाय ।

कांग्रेस का कथन यही है, तुम्हें रहे समुभाय ॥

पहले तो तुम बड़े शौकसे, देते नाम लिखाय ।

जब आई वारन्ट तुम्हारी, नानी सी घर जाय ॥

माफ़ी मत मांगो मेरे भाइयो चाहे जान भलेही जाय ।
 जब तुम प्यारे ससुराल चले हो, माता लिया डराय ॥
 वहां पहुँचकर माफ़ी माँगी, दर्द नही नाक कड़ाय ।
 माफ़ी मत मांगो मेरे भाइयो चाहे जान भलेही जाय ॥
 माफ़ी माँगकर घरमें आयें, कायर रहे कहाय ।
 नगर निवासिन के देखतही, सर नीचा होय जाय ॥
 माफ़ी मत मांगो मेरे भाइयो, चाहे जान भलेही जाय ।
 दित्त में अपने स्वराज्य लेना, खेल न सम्भो भाय ॥
 जबतक खून पियेना तुम्हारा, भारतमाता नही अघाय ।
 माफ़ी मत मांगो मेरे भाइयो चाहे जान भले ही जाय ॥
 कहे महावीर धिक्क है उनका, जगमें जीना भाय ।
 सुनलो माफ़ी माँगन वालो, तुम्हरा जन्म नसाय ॥
 माफ़ी मत मांगो मेरे भाइयो चाहे जान भलेही जाय ।

✽ भारत के बीरो उठो ✽

उठो प्यारे बीरो न रहने कसर दो ।
 जवानी का अपनी दिखा तुम असर दो ॥
 भगादो भारत से धूर्तों को प्यारे ।
 सताये इन्होंने हैं आई हज़ारे ।
 इसी लिये इनको भगादो भगादो ॥
 जवानी का अपनी दिखा तुम असर दो ।
 हाय रह रह के चुसा है आदम इमारत ॥

सताया गया जितना भारत हमारा ।
 सताने का इज्जाम बीगे दिखादो ॥
 जवानी का अपनी असर तुम दिखादो ।
 लूटा हमारा है भारत ये देखो ॥
 बनाया है दोनों से मोताज देखो ।
 लूटने का मजा जलइ इनको चखादो ॥
 जवानीक अपनी दिखा तुम असर दो ।
 गुप्ता कहे जोड़कर हाथ प्यारो ॥
 उठो अबतो देखो श्री सोचो बिचारो ।
 भारत में डंका ये बीरो बजादो ॥
 जवानी का अपनी दिखा तुम असरदो ।



पुस्तक मिलने का पता

रामस्वरूप गुप्त मु० पो० भोंकक जिला कानपुर

प्रेम प्रिंटिंग प्रेस, कानपुर ।